27 / 02 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संगमयुग पर श्रृंगारा हुआ
मधुर अलौकिक मेले की अनुभूति

➢➢ मैं आत्मा चमकती हुई मणि...

➳ _ ➳ संगमयुग पर श्रृंगारे हुये अलौकिक मेले में...

→ बापदादा से अलौकिक मिलन मेला मना रही हूँ।

◆ अपने स्नेह की जादू से बाप को भी बांध लेने वाली

◆ मैं बाप की विशेष बच्ची बन गयी हूँ।

● मैं कितनी भाग्यशाली हूँ ...

● जो इस मधुर अलौकिक मेले का हिस्सा बन गयी हूँ।

● वाहः मेरा भाग्य वाहः!

➳ _ ➳ मैं बापदादा की विशेष श्रृंगारी हुई अमूल्य रतन हूँ।

→ मैं अपने श्रृंगार को देख रही हूँ।

◆ सिर पर कितना सुंदर लाइट का ताज चमक रहा है।

→ लाइट के क्राउन के बीच मुझ आत्मा की निशानी

◆ चमकती हुई मणि के समान चमक रही है।

➢➢ अब मैं अपने ताजधारी स्वरूप को देखती हूँ।

➳ _ ➳ दिव्य गुणों से श्रृंगारी हुई...

→ मैं कितनी सजी सजाई मूर्त बन गयी हूँ।

→ कितना श्रेष्ठ और सुंदर श्रृंगार है मेरा...

→ मेरे इस श्रेष्ठ अविनाशी श्रृंगारे हुए स्वरूप को देख

◆ विश्व की सर्व आत्मायें न चाहते हुए भी मेरी ओर आकर्षित हो रही है।

➳ _ ➳ मेरे इस समय के श्रेष्ठ अविनाशी श्रृंगार के यादगार में ही...

→ भक्त लोग मेरे जड़ चित्रों को सुंदर से सुंदर सजाते रहते है।

◆ बापदादा भी मेरे इस स्वरूप को देख हर्षित हो रहे है।

➢➢ अभी के इस श्रृंगार से ही मैं आत्मा चैतन्य देव आत्मा स्वरूप बनती जा रही हूँ।

➳ _ ➳ बापदादा मेरा ऐसा अविनाशी श्रृंगार कर रहे है...

→ जिससे मेरा तीनो ही स्वरूप प्रत्यक्ष हो रहा है...

→ वर्तमान अलौकिक श्रृंगारित स्वरूप

→ अपने राज्य का देव आत्मा का स्वरूप...

→ फिर भक्ति मार्ग में यादगार चित्र

◆ बापदादा मेरे तीनो स्वरूप को देखकर हर्षित हो रहे है

➳ _ ➳ कितना मधुर अलौकिक मेला है ये...

→ कि बापदादा भी मेरे प्यार के बंधन में बंध मुझसे मिलने चले आये है...

→ मेरे स्नेह के जादू ने निर्बन्धन को भी बंधन में बांध लिया है...

◆ मेरे स्नेह के जादू ने बाप को भी मेरा दीवाना बना दिया है।

◆ मेरी तरह मेरे बाबा भी मुझे निरन्तर याद करते रहते है।

● आज मुझे अपने भाग्य पर भी नाज़ हो रहा है।

● अपने इतनी ऊँचे भाग्य को देख मैं आत्मा भी धन्य धन्य हो गयी हूँ।